2.7/7 2.7/7 (No.7) Teaching Learning Evaluation

है। इस प्रकार मनोविनोदार्थ भ्रमणार्थी वह है जो आनन्द के लिए किसी देश में जहाँ का वह निवासी नहीं है वहाँ 24 घण्टे से कम ठहरता है तथा वहाँ कोई लाभ का कार्य नहीं करता है। पर्यटक भ्रमणार्थी वह है जो किसी भी बाहर देश में 24 घण्टे से कम रुके भले ही इस बीच वह कितने ही स्थलों पर थोड़ी-थोड़ी देर ठहरे। जिनका उद्देश्य पर्यटन हैं उन्हें Day Visitor कहा जाता है। किंतु वे लोग जो अपनी यात्रा के दौरान मात्र सीमा पार चले जाते हैं वहाँ के लिए Tourist नहीं कहे जाते। उन्हें सीमा पार करने वाला यात्री कहा जाता है।

इण्टरनेशनल यूनियन ऑफ ऑफीशियल ट्रैवल आर्गनाइजेशन के अनुसार इसमें अन्य उद्देश्यों के साथ आनन्द लगा होता है। यह एक नई मान्यता उपर्युक्त परिभाषा के साथ इसने पर्यटकों के सदर्भ में जोड़ी है।

पर्यटन या यात्रा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक सामान्य भाव का प्रदर्शक बन गया है। पर्यटन श्रेणी से अभिप्राय ऐसे आगन्तुकों व दर्शकों से आज लिया जाता है जो समाज में सामान्य स्तर के लोग होते हैं। अतः पर्यटक आवास जो विभिन्न पर्यटन केन्द्रों में बने हैं, वे सामान्य सुविधायुक्त होते हैं तथा इसका अभिप्राय होता है, सामान्य श्रेणी के भ्रमणार्थियों के ठहरने का स्थान। इसमें न तो उच्चकोटि की सुविधाएँ होती हैं और न इसका किराया ही महँगा होता है। इसीलिए साधारणतया उसमें सम्मानित लोग ठहरना अपनी अवमानना समझते हैं। ऐसे पर्यटक अपने को आगन्तुक, यात्री या अतिथि कहलाना अधिक पसन्द करते हैं। लगता है कि इन शब्दों का प्रयोग पर्यटक के पर्यायवाची के रूप में अब होने लगा है। जब पर्यटकों की कोटि में विस्तार हुआ है, संयुक्त राज्य अमेरिका के होटलों में पर्यटकों को **'अतिथि'** तथा आवास गृहों में **'आश्रयदाता'** कहा जाता है।

पर्यटन की अवधारणा

आस्ट्रियन अर्थशास्त्री हर्मन वी. स्कलर्ड ने 1910 में पर्यटन की सबसे पहली परिभाषा दी थी। उसने इसे कुछ क्रियाओं का भाग बताया जो मुख्यतः आर्थिक प्रकृति की होती हैं, जो विदेशियों के किसी देश, शहर या क्षेत्र में आगमन, रुकने और चलने-फिरने से सम्बन्धित होती हैं। प्रो. हन्जिकर और क्राफ ने 1942 में इसकी एक अधिक तकनीकी परिभाषा दी। इस स्विस प्रोफेसर के अनुसार - 'पर्यटन यात्रा और ठहरने से उदित हुई, इस शर्त पर कि ठहरना स्थायी निवास बनाने के आधार पर न हो और पारिश्रमिक गतिविधि से सम्बन्धित न हो।'

1976 में ब्रिटिश पर्यटन संस्थान द्वारा भी पर्यटन की एक परिभाषा इस प्रकार दी- 'पर्यटन लोगों का कम अवधि के लिए स्थानों को अस्थायी गति करना है, बाहर के स्थानों को जहाँ वे सामान्यतः रहते और कार्य करते हैं और इन स्थानों पर ठहरने के दौरान उनका सभी उद्देश्यों के लिए चलना-फिरना चाहे वह दिन की भेंट हो या घूमना फिरना हो।'

इन परिभाषाओं से निम्नलिखित बातें निकलती हैं:—

(1) अनिवासियों का यात्रा से जुड़ना।

(2) जिस क्षेत्र की यात्रा की जा रही हो, वहाँ अस्थायी प्रकृति का ठहराव।

(3) ठहराव किसी भी प्रकार कमाई या पारिश्रमिक से सम्बन्धित न हो।

इस प्रकार पर्यटन उस पर्यटकों की चलायमान जनसंख्या से सम्बंधित है जो उन स्थानों के लिए अजनबी होते हैं जहाँ की यात्रा करते हैं। पर्यटन आवश्यक रूप में एक आनन्ददायक और मनोरंजक गतिविधि है जिसमें एक व्यक्ति द्वारा अपने निवासी स्थान पर कमाई गई राशि को यात्रा स्थान पर व्यय किया जाता है।

इस प्रकार मानव अपने निवास स्थान से बाहर निकलकर दूसरे स्थान पर जाता है और वहाँ कुछ काल तक उसका ठहराव होता है। इस क्रिया को पर्यटन कहते हैं।

इस क्रिया में दो विरोधी बातें सम्मिलित हैं: एक बाहर की यात्रा और दूसरा वहाँ ठहराव। एक गतिमान और दूसरी स्थैतिक स्थिति। ये दोनों क्रियाएँ साथ-साथ होती हैं। पर इनमें दो शर्तें भी लगी होती हैं, एक इसके पीछे उद्देश्य नियमित नौकरी या मात्र अर्थोपार्जन नहीं होता तथा दूसरे इसमें वहाँ ठहराव की अवधि अत्यत अल्पकालीन होती है। पर इन सभी बातों के लागू होने के मूल में है, यात्री का अपने घर से बाहर होना।

पर्यटन एक आनन्दात्मक क्रिया है। इसमें मनुष्य अपने निवास स्थान में अर्जित द्रव्य का व्यय करने हेतु दर्शनीय स्थलों में जाता है तथा उनकी यात्रा करता है। ऐसी यात्राएँ आर्थिक प्रयोजन से नहीं की जाती हैं। एक सर्वेक्षण के आधार पर अमेरिका में पता लगाया गया है कि पचहत्तर प्रतिशत विदेशी यात्राएँ तथा पचास प्रतिशत घरेलू यात्राएँ आमोद-प्रमोद के लिए ही की गई हैं।

इसी की पुष्टि इन्टरनेशल एसोसिएशन ऑफ साइंटिफिक एक्सपर्टस् ऑन टूरिज्म ने भी की है। इससे स्पष्ट है कि पर्यटन में (1) दर्शनीय स्थल, (2) यात्रा, (3) अस्थायी ठहराव तथा (4) आर्थिक क्रियाओं का एक स्थान- ये चार मूल संदर्भ होते हैं। अतः पर्यटन का सम्पूर्ण सम्बन्ध एक विदेशी का एक स्थान पर ठहरने से है, इस शर्त पर कि वहाँ स्थायी रूप से रुकेगा। पर कोई स्थायी या अंशकालिक क्रिया का सम्पादन नहीं करेगा।

भ्रमण जीव की जन्मजात प्रवृत्ति है। धरती पर उतरते ही वह घूमने लगता है। पशु, सरीसृप आदि के शिशु आँख खोलते ही चलना और घूमना शुरू कर देते हैं। यह सत्य मानव जाति के साथ भी रचना के समय से जुड़ा होता है। इसी के लिए प्रकृति ने उसे पैर दिये हैं। लोग किसी-न-किसी प्रकार घूमते रहते हैं। इसका इतिहास सृष्टि के साथ जुड़ा है। लोग अनादिकाल से यात्राओं की ओर उन्मुख थे। प्रायः घर में या एक स्थान पर रहते-रहते ऊब होना स्वाभाविक है। इससे छूटकारा पाने के लिए परिभ्रमण ही एक माध्यम है। साथ ही यह आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी है। यह देश की आय को बहुत अधिक बढ़ाता है,

है। इस प्रकार मनोविनोदार्थ भ्रमणार्थी वह है जो आनन्द के लिए किसी देश में जहाँ का वह निवासी नहीं है वहाँ 24 घण्टे से कम ठहरता है तथा वहाँ कोई लाभ का कार्य नहीं करता है। पर्यटक भ्रमणार्थी वह है जो किसी भी बाहर देश में 24 घण्टे से कम रुके भले ही इस बीच वह कितने ही स्थलों पर थोड़ी-थोड़ी देर ठहरे। जिनका उद्देश्य पर्यटन हैं उन्हें Day Visitor कहा जाता है। किंतु वे लोग जो अपनी यात्रा के दौरान मात्र सीमा पार चले जाते हैं वहाँ के लिए Tourist नहीं कहे जाते। उन्हें सीमा पार करने वाला यात्री कहा जाता है।

इण्टरनेशनल यूनियन ऑफ ऑफीशियल ट्रैवल आर्गनाइजेशन के अनुसार इसमें अन्य उद्देश्यों के साथ आनन्द लगा होता है। यह एक नई मान्यता उपर्युक्त परिभाषा के साथ इसने पर्यटकों के संदर्भ में जोड़ी है।

पर्यटन या यात्रा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक सामान्य भाव का प्रदर्शक बन गया है। पर्यटन श्रेणी से अभिप्राय ऐसे आगन्तुकों व दर्शकों से आज लिया जाता है जो समाज में सामान्य स्तर के लोग होते हैं। अतः पर्यटक आवास जो विभिन्न पर्यटन केन्द्रों में बने हैं, वे सामान्य सुविधायुक्त होते हैं तथा इसका अभिप्राय होता है, सामान्य श्रेणी के भ्रमणार्थियों के ठहरने का स्थान। इसमें न तो उच्चकोटि की सुविधाएँ होती हैं और न इसका किराया ही महँगा होता है। इसीलिए साधारणतया उसमें सम्मानित लोग ठहरना अपनी अवमानना समझते हैं। ऐसे पर्यटक अपने को आगन्तुक, यात्री या अतिथि कहलाना अधिक पसन्द करते हैं। लगता है कि इन शब्दों का प्रयोग पर्यटक के पर्यायवाची के रूप में अब होने लगा है। जब पर्यटकों की कोटि में विस्तार हुआ है, संयुक्त राज्य अमेरिका के होटलों में पर्यटकों को **'अतिथि'** तथा आवास गृहों में **'आश्रयदाता'** कहा जाता है।

पर्यटन की अवधारणा

आस्ट्रियन अर्थशास्त्री हर्मन वी. स्कलर्ड ने 1910 में पर्यटन की सबसे पहली परिभाषा दी थी। उसने इसे कुछ क्रियाओं का भाग बताया जो मुख्यतः आर्थिक प्रकृति की होती हैं, जो विदेशियों के किसी देश, शहर या क्षेत्र में आगमन, रुकने और चलने-फिरने से सम्बन्धित होती हैं। प्रो. हन्जिकर और क्राफ ने 1942 में इसकी एक अधिक तकनीकी परिभाषा दी। इस स्विस प्रोफेसर के अनुसार - 'पर्यटन यात्रा और ठहरने से उदित हुई, इस शर्त पर कि ठहरना स्थायी निवास बनाने के आधार पर न हो और पारिश्रमिक गतिविधि से सम्बन्धित न हो।'

1976 में ब्रिटिश पर्यटन संस्थान द्वारा भी पर्यटन की एक परिभाषा इस प्रकार दी- 'पर्यटन लोगों का कम अवधि के लिए स्थानों को अस्थायी गति करना है, बाहर के स्थानों को जहाँ वे सामान्यतः रहते और कार्य करते हैं और इन स्थानों पर ठहरने के दौरान उनका सभी उद्देश्यों के लिए चलना-फिरना चाहे वह दिन की भेंट हो या घूमना फिरना हो।'.

इन परिभाषाओं से निम्नलिखित बातें निकलती हैं:—

(1) अनिवासियों का यात्रा से जुड़ना।

(2) जिस क्षेत्र की यात्रा की जा रही हो, वहाँ अस्थायी प्रकृति का ठहराव।

(3) ठहराव किसी भी प्रकार कमाई या पारिश्रमिक से सम्बन्धित न हो।

इस प्रकार पर्यटन उस पर्यटकों की चलायमान जनसंख्या से सम्बंधित है जो उन स्थानों के लिए अजनबी होते हैं जहाँ की यात्रा करते हैं। पर्यटन आवश्यक रूप में एक आनन्ददायक और मनोरंजक गतिविधि है जिसमें एक व्यक्ति द्वारा अपने निवासे स्थान पर कमाई गई राशि को यात्रा स्थान पर व्यय किया जाता है।

इस प्रकार मानव अपने निवास स्थान से बाहर निकलकर दूसरे स्थान पर जाता है और वहाँ कुछ काल तक उसका ठहराव होता है। इस क्रिया को पर्यटन कहते हैं।

इस क्रिया में दो विरोधी बातें सम्मिलित हैं: एक बाहर की यात्रा और दूसरा वहाँ ठहराव। एक गतिमान और दूसरी स्थैतिक स्थिति। ये दोनों क्रियाएँ साथ-साथ होती हैं। पर इनमें दो शर्तें भी लगी होती हैं, एक इसके पीछे उद्देश्य नियमित नौकरी या मात्र अर्थोपार्जन नहीं होता तथा दूसरे इसमें वहाँ ठहराव की अवधि अत्यंत अल्पकालीन होती है। पर इन सभी बातों के लागू होने के मूल में है, यात्री का अपने घर से बाहर होना।

पर्यटन एक आनन्दात्मक क्रिया है। इसमें मनुष्य अपने निवास स्थान में अर्जित द्रव्य का व्यय करने हेतु दर्शनीय स्थलों में जाता है तथा उनकी यात्रा करता है। ऐसी यात्राएँ आर्थिक प्रयोजन से नहीं की जाती हैं। एक सर्वेक्षण के आधार पर अमेरिका में पता लगाया गया है कि पचहत्तर प्रतिशत विदेशी यात्राएँ तथा पचास प्रतिशत घरेलू यात्राएँ आमोद-प्रमोद के लिए ही की गई हैं।

इसी की पुष्टि इन्टरनेशल एसोसिएशन ऑफ साइंटिफिक एक्सपर्टस् ऑन टूरिज्म ने भी की है। इससे स्पष्ट है कि पर्यटन में (1) दर्शनीय स्थल, (2) यात्रा, (3) अस्थायी ठहराव तथा (4) आर्थिक क्रियाओं का एक स्थान- ये चार मूल संदर्भ होते हैं। अतः पर्यटन का सम्पूर्ण सम्बन्ध एक विदेशी का एक स्थान पर ठहरने से है, इस शर्त पर कि वहाँ स्थायी रूप से रुकेगा। पर कोई स्थायी या अंशकालिक क्रिया का सम्पादन नहीं करेगा।

भ्रमण जीव की जन्मजात प्रवृत्ति है। धरती पर उतरते ही वह घूमने लगता है। पशु, सरीसृप आदि के शिशु आँख खोलते ही चलना और घूमना शुरू कर देते हैं। यह सत्य मानव जाति के साथ भी रचना के समय से जुड़ा होता है। इसी के लिए प्रकृति ने उसे पैर दिये हैं। लोग किसी-न-किसी प्रकार घूमते रहते हैं। इसका इतिहास सृष्टि के साथ जुड़ा है। लोग अनादिकाल से यात्राओं की ओर उन्मुख थे। प्रायः घर में या एक स्थान पर रहते-रहते ऊब होना स्वाभाविक है। इससे छूटकारा पाने के लिए परिभ्रमण ही एक माध्यम है। साथ ही यह ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी है। यह देश की आय को बहुत अधिक बढ़ाता है,

गौरव की अभिवृद्धि करता है तथा व्यक्तित्व को विकास प्रदान करता है। प्राणनाथ सेन के अनुसार "Tourism therefore is a pleasure activity in which money earned in one's normal domicile is spent in the place visited."

Dr. Zivadin के अनुसार, यह एक सामाजिक संचरण है जिसका उद्देश्य है विश्राम, ध्यान का विकेन्द्रीकरण और सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति।

पर्यटन के कारण/उद्देश्य/विशेषता

प्रारंभ में आवश्यकताएँ सीमित थीं, लोगों में घर के प्रति आसक्ति थी। परिवार का मोह था, समय की कमी थी। काम से फुरसत नहीं मिलती थी। सभी क्रिया अपने ही हाथों से करनी होती थी।

अधिक भू-भाग जंगलों से ढंका था। वन्य प्राणियों तथा आपराधिक लोगों का भय बना रहता था। सुरक्षा साधनों की कमी थी। इससे लोग भ्रमण की ओर गतिशील नहीं थे। ज्ञान की शाखाएँ भी कम थीं। विशेषीकरण की ओर लोगों का ध्यान नहीं था। पर्यटन की सुविधाएँ भी नगण्य थीं।

बाद में धर्म की प्रधानता 'विदेशी मुद्रा का अर्जन' भय के निवारण, आत्मविश्वास, आदर्श की सुरक्षा के लिए बढ़ती गई, धर्म का प्रचार जीवन का लक्ष्य बना। इसी के लिए लोग परिभ्रमण करने निकले। जब आवश्यकताएँ बढ़ीं तो इस भावना ने परस्पर होड़ और वैमनस्य को बल दिया। अतः युद्ध होने लगे तथा उसकी विभीषिका से बचने के लिए भी लोगों ने भागना शुरू किया। इस प्रकार युद्ध और देशांतरगमन भी कालांतर में इससे जुड़ा। फिर सुविधाओं की वृद्धि हुई। आर्थिक स्थिति में विकास हुआ। अवकाश के अवसर बढ़े। तब आनन्द के लिए परिभ्रमण होने लगा, ज्ञान की शाखाएँ बढ़ीं, विशिष्टता के क्षेत्र निर्धारित हुए। इसने भी इस क्रिया को बढ़ा दिया। इस प्रकार पर्यटन के अनेक कारण हैं जो निम्नानुसार हैं—

पर्यटन के कारण —

1. आनन्द के लिए—
   - (i) दैनिक जीवन की व्यस्तता और नियमित क्रिया से ऊब कर व्यक्ति यह चाहता है कि इस लोक से हटकर अपने थके दिमाग को विश्राम दे।
   - (ii) घर के वातावरण में रोज-रोज की उलझन, मानसिक तनाव, चिन्ता, समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए कुछ समय शांति, मनोरंजन और विनोद को प्राप्त कर सके।
   - (iii) नई और उत्तेजक अनुभूतियों की प्राप्ति के लिए।
   - (iv) कुछ क्षण जीवन में सुख खरीदने के लिए कि अपनी रुचि के अनुसार आवास, भोजन और क्रियाएँ की जा सकें।

   - (v) सुन्दर प्राकृतिक स्थलों में आनन्द लूटने के लिए।
   - (vi) भौगोलिक प्राकृतिक स्थलों: ताल, तलैया, मरुभूमि, वन, समुद्र तट आदि को देखने के लिए।

2. शैक्षणिक उद्देश्य—
   - (i) दूसरे स्थानों में अपने ज्ञान के प्रसार के लिए।
   - (ii) दूसरों के ज्ञान से अपने को लाभान्वित करने के लिए। इनमें विद्वानों से मिलना, पुस्तकालयों में जाना, प्रयोगशाला और संग्रहालयों को देखना आदि सम्मिलित हैं।
   - (iii) यह जानने के लिए कि दूसरे स्थान के लोग किस प्रकार अपना जीवन चलाते हैं, उनकी क्रियाएँ क्या हैं?
   - (iv) शैक्षणिक गोष्ठियों में भाग लेने के लिए।
   - (v) ज्ञान के विशेषीकरण के युग से जहाँ जिस विशिष्ट ज्ञान की शाखा में अधिक विकास हुआ है, वहाँ जाकर उसको सीखने के लिए।
   - (vi) प्राविधिक और औद्योगिक शिक्षा के उपयुक्त स्थानों में जाकर नई-नई जानकारी प्राप्त करने के लिए।

3. सांस्कृतिक कारण—
   - (i) उत्सवों और त्यौहारों को देखना तथा अपने देश की परम्पराओं को उसमें जोड़ना जैसे भारत में रूस महोत्सव और रूस में भारत महोत्सव। इसी उद्देश्य से अब तक भारत ने तीन बार विदेशों में अपना महोत्सव मनाया है।
   - (ii) सांस्कृतिक केन्द्रों, उत्खनन स्थलों, मंदिरों, भवनों, मूर्तियों, कला के प्रकारों को देखना, परम्परागत नृत्य, संगीत।
   - (iii) लोक परम्पराओं और लोक संस्कृति और कला की ओर आकर्षित होकर जैसे जनजातीय नृत्य, दक्षिण की शृंगार परम्परा, आदिवासियों के गायन आदि।
   - (iv) धर्म प्रचारकों के स्मारक केन्द्र, जन्मस्थली आदि देखकर।

4. रक्त सम्बन्धी कारण—
   - (i) अपने पूर्वजों के आवास स्थलों को देखना।
   - (ii) दूर रहने वाले कुछ सम्बन्धियों से मिलना।
   - (iii) मित्रों एवं परिचितों की ओर आकृष्ट होना।

विविध
(Miscellaneous)

पर्यटन में जीवन की सैर
TOURISM

भारत अपनी वैभवशाली सांस्कृतिक विरासत के कारण पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केन्द्र है. प्राकृतिक विभिन्नता, मनोरम दृश्यावली, अनुपम भित्तिचित्रों, उत्कृष्ट शिल्पकला, उत्सवों, मेलों वाली सांस्कृतिक विरासत पर्यटकों को सहज ही आमन्त्रित करती हैं. बदलते माहौल के साथ पर्यटन के पैमाने व पर्यटक भी बदल रहे हैं. पर्यटकों की मुख्य आवश्यकताएँ– आवास, भोजन, यातायात, खरीददारी के लिए बाजार एवं मार्गदर्शन सुविधाएँ बेरोजगारों के लिए वरदान सिद्ध हो रही हैं.

विभिन्न भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विभेदता वाले भारत उपमहाद्वीप में अनेक जीवन-शैलियाँ, वेशभूषाएं खानपान, भाषा आदि पर्यटन के एक विशाल क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं. इसके साथ ही रोमांचक, साहसिक, भड़कीले खेल, अन्य संसाधन आदि तरीकों से पर्यटकों को विशेष रूप से आकर्षित किया जा सकता है. पर्यटन व्यवसाय को उद्योग का दर्जा दिया जा चुका है और यह क्षेत्र सबसे ज्यादा विदेशी मुद्रा का अर्जन भी करता है. पर्यटकों के आगमन से स्थलों के अलावा अन्य साधनों का भी विकास हुआ है, जिनकी पर्यटक सेवाएं लेते हैं उनमें प्रमुख हैं–

1. **होटल** (Hotel)–होटल में मुख्य रूप से सुपरवाइजर व क्राफ्ट-मैन की आवश्यकता होती है, इसमें प्रशिक्षित व्यक्तियों को लिया जाता है जिनका कार्य निम्नलिखित है–

(i) फ्रंट ऑफिस ऑपरेशन (स्वागत कार्य)

(ii) फूड प्रोडक्शन (भोजन बनाना)

(iii) फूड एवं बीवरेज (काफी हाउस, डाइनिंग व रेस्तरॉ)

(iv) हाउस-कीपिंग (साज-सज्जा, रूम सर्विस, सफाई)

2. **हेरिटेज होटल** (Heritage Hotel)–58 वर्ष पुरानी हवेली या गढ़ जिसको होटल का रूप दिया जाता है, हेरिटेज होटल कहा जाता है. पर्यटक आधुनिक बहुमंजिला होटलों से ज्यादा इन जगहों को तरजीह देते हैं जिनमें सेवा के साथ रखरखाव, पेंटिंग आदि नए क्षेत्रों में भी रोजगार के अवसर मिलते हैं.

3. **पेइंग गेस्ट योजना** (Paying Guest Scheme)–कोई पर्यटक गाँवों या शहरों में जाता है और घर में रहना पसंद करता है तो वहाँ रह सकता है. इस योजना के अन्तर्गत अपने घर के कुछ (पाँच तक) कमरे पंजीकृत करवा दिए जाते हैं.

4. **टूर ऑपरेटर** (Tour Operator)–पर्यटकों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए सुविधाजनक परिवहन की जरूरत होती है. इसके लिए विभिन्न टूर एण्ड ट्रेवल एजेंसीज कार्यरत् हैं जो आरामदायक या पर्यटक द्वारा चाही गई सुविधाओं के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाती हैं. कभी-कभी पर्यटकों को छोटी गाड़ी या दुपहिया वाहनों की भी जरूरत होती है.

एक टूर ऑपरेटर वह व्यक्ति होता है जो टूर एजेन्सी व पर्यटक के मध्य की कड़ी है. यह विभिन्न एजेन्सीज से मिलकर सामूहिक यात्रा का प्रबन्ध करता है. इसके साथ ही विभिन्न स्थानों उनकी विशेषताओं, मौसम, आने वाली कठिनाइयों, सावधानियों आदि के बारे में पर्यटकों को अवगत कराता है.

5. **रिटेल ट्रेवल एजेन्ट** (Retail Travel Agent)–यह पर्यटकों को विभिन्न एजेन्सियों के बारे में जानकारी देता है व उनको मनोवैज्ञानिक रूप से आश्वासित करता है. यह एजेन्ट, होटल आदि के लिए भी काम करता है. जहाँ से वह निर्धारित कमीशन प्राप्त करता है.

6. **ट्रेवल मैनेजर** (Travel Manager)–यह अपने विभिन्न रिटेल एजेन्टों को देखता है इसे एजेन्सी के प्रचार-प्रसार व प्रतियोगिता की दशाओं को समझकर कार्य करना होता है.

7. **विभागाध्यक्ष** (Head of Department)–यह प्रबन्धकों का प्रबन्धक कहलाता है. इसका कार्य एजेन्सी के विभिन्न हिस्सों के बीच तालमेल रखना है. यह प्रबंधकों के साथ मिलकर कर्मचारियों के प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था भी करता है.

8. **सफारी** (Safari)–ये पहाड़ों, दुर्गम स्थानों, रेगिस्तान आदि स्थानों पर यातायात के साधन–घोड़ों, ऊँटों आदि की व्यवस्था करते हैं. पैदल पर्यटक भी सफारी के अन्तर्गत आता है.

9. **टूर एक्जीक्यूटिव** (Tour Executive)–इसका कार्य यात्रा व ठहरने की उत्तम व्यवस्था करवाना होता है. यह रेल, बस या ऐयर सेवाएँ लेने वाले यात्रियों को टिकिट तथा आरक्षण की व्यवस्था करता है. पर्यटकों के साथ गाइड की व्यवस्था या विशेष गाइडों की नियुक्ति भी यह करता है.

10. **गाइड्स** (Guides)–एक गाइड का कार्य पर्यटकों की हर जिज्ञासा को शान्त करना है. यात्रा के दौरान वह एक सच्चे दोस्त की तरह साथ रहता है. साइट, संस्कृति, वातावरण आदि हर एक चीज की जानकारी उसे बिना झुंझलाहट के देनी होती है, भारत में आने वाले पर्यटक ज्यादातर ब्रिटेन, फ्रांस, इटली, रूस, जापान, स्पेन, स्वीडन, आस्ट्रेलिया, इटली, जर्मनी आदि से आते हैं, इसलिए एक गाइड से इनमें से किसी एक या ज्यादा देशों की भाषा की जानकारी की आशा की जाती है.

या विशेष त्यौहारों पर अपनी खानपान, रेस्तराँ, फास्ट फूड आदि की इकाइयाँ लगाकर अपना रोजगार चलाना है.

13. **हस्तशिल्प शोरूम** (Handicraft Showroom)–इसमें किसी स्थान विशेष की संस्कृति से सम्बन्धित हस्तशिल्प की बिक्री का कार्य किया जाता है जिनमें पेटिंग, लाख का सामान, गुड़ियाँ, मूर्तियाँ, वेशभूषा, कशीदा, जूतियाँ, कठपुतली गलीचे, ऊनी वस्त्र, खादी के वस्त्र शाल, टाई-डाई प्रिन्ट वस्त्र साड़ियाँ, मालाएँ, इत्र, खस की वस्तुएँ आदि हैं.

इसके अतिरिक्त पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए उनकी हर सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए पारिस्थितिकीय पर्यटन (Eco-Tourism), चिकित्सा पर्यटन (Medical Tourism), ग्रामीण पर्यटन (Rural Tourism) व फार्म हाउस पर्यटन के रूप में नए क्षेत्रों का विकास हुआ है.

14. **साहसिक पर्यटन** (Adventure Tourism)– प्राकृतिक संसाधनों के साथ मानवकृत कारनामों को जोड़कर इस विशेष क्षेत्र का विकास किया गया है. आज यह आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ कैरियर के अवसर उपलब्ध करवा रहा है प्रतिवर्ष भारत में हजारों की संख्या में विदेशी पर्यटक केवल एडवेंचर टूरिज्म के लिए ही आते हैं.

पाठ्यक्रम व संस्थान

संस्थान का नाम	पाठ्यक्रम	अवधि
कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज, दिल्ली विश्वविद्यालय.	स्नातक डिग्री	3 वर्षीय
मोहनलाल सुखाड़िया, विश्वविद्यालय, उदयपुर.	पी. जी. डिप्लोमा इन टूरिज्म एण्ड होटल मैनेजमेन्ट	1 वर्षीय
इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ टूरिज्म एण्ड ट्रेवल मैनेजमेन्ट (पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार) गोविन्दपुरी, ग्वालियर–11 (म. प्र.)	डिप्लोमा इन टूरिज्म मैनेजमेन्ट अथवा डिप्लोमा इन डैस्टीनेशन मैनेजमेन्ट	2 वर्षीय
इंस्टीट्यूट ऑफ टूरिज्म एण्ड फैशन टेक्नोलॉजी, बी-8 पंचशील बिहार, हरीमार्ग, सिविल लाइन्स, जयपुर.	पी. जी. डिप्लोमा इन टूरिज्म मैनेजमेन्ट	1 वर्षीय
इंडिया इंटरनेशनल ट्रेड सेन्टर, पृथ्वीराज मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर	डिप्लोमा इन इंटरनेशनल एयर लाइन्स ट्रेवल एण्ड टूरिज्म मैनेजमेन्ट	5 माह
भारतीय विद्याभवन, कस्तूरबा गांधी रोड, नई दिल्ली.	सर्टीफिकेट कोर्स इन एयर लाइंस टूरिज्म एण्ड ट्रेवल मैनेजमेन्ट	5 माह
ट्रेड विंग्स इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट, राधामार्ग, राजमन्दिर सिनेमा के पीछे, जयपुर.	डिप्लोमा इन इंटरनेशनल एयर लाइन्स एण्ड ट्रेवल मैनेजमेन्ट	5 माह

11. **पब्लिसिटी ऑफिसर** (Publicity Officer)–विभिन्न पर्यटन स्थानों की खोज करके एजेन्सी को उपलब्ध करवाना, विभिन्न बुकलेट छपवाकर स्टेशनों, बस अड्डों व एयरपोर्ट पर रखवाना जैसे कार्य **प्रचार अधिकारी** करता है. वैसे देखें तो इनकी नजर में जो अच्छा है वह अच्छा है. इनकी एक बड़ी भूमिका यह होती है कि ये नए पर्यटक स्थानों को विकसित करवा सकते हैं तथा किसी पर्यटक स्थल पर ज्यादा भीड़ होने के कारण उसका आकर्षण खोने से बचा भी सकते हैं.

12. **केटरिंग इकाई** (Catering Unit)–यह स्वरोजगार से सम्बन्धित है इसके अन्तर्गत विभिन्न पर्यटक स्थलों, मेलों

एडवेंचर टूरिज्म का विकास उन देशों में अधिक होता जहाँ एडवेंचर्स के लिए प्राकृतिक संसाधन, जैसे–पहाड़, नदियाँ, वन्य-जीव, पशु-पक्षी, जंगल, समुद्र, घाटियाँ आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं, जिससे पर्यटक ऊँचे-ऊँचे पहाड़ एवं चोटियों पर सम्बन्धित खेलों एवं पर्वतारोहण का आनन्द ले सकें; समुद्रों एवं नदियों के जीव-जंतुओं को देख सकें जंगलों में वन्य-पशु एवं पक्षियों का स्वतंत्र विचरण व उनकी स्वच्छंद क्रीड़ा-लीलाओं को देख सकें.

एडवेंचर के इन साधनों की दृष्टि से भारत एक सम्पन्न देश है. कहीं अनेक छोटे-छोटे पहाड़ व चोटियाँ हैं, तो कहीं हिमालय जैसे ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों की श्रृंखलाएं. यहाँ गंग

ब्रह्मपुत्र जैसी बड़ी-बड़ी नदियाँ हैं, तो सुनहरा विस्तृत मरुस्थल भी. इसके अतिरिक्त यहाँ वन्य-जंतुओं के लिए 50 से भी अधिक संरक्षित पार्क हैं व देश का विशाल क्षेत्र समुद्र से भी घिरा हुआ है. इन कारणों से ही भारत में इस क्षेत्र का विकास तीव्रगति से हो रहा है.

प्रमुख क्षेत्र :

1. **जंगलों में एडवेंचर टूरिज्म :** यहाँ पर्यटक वन्य-पशु एवं पक्षियों के स्वच्छंद विचरण, आदतें, शिकार, वन्य जीवों का शिकार करते हुए, घूमते हुए जंगली जानवरों के साथ विभिन्न क्रिया-कलापों आदि का आनन्द लेने आते हैं.

2. **पहाड़ एवं चोटियों पर** अनेक प्रकार के साहसिक खेलों का आनन्द लेने के लिए टूरिस्ट हिमालय जैसे बर्फीले पहाड़ों एवं एवरेस्ट जैसी ऊँची-ऊँची चोटियों पर जाते हैं.

3. **नदियों एवं समुद्रों** में भी एडवेंचर टूरिज्म के लिए अनेक प्रकार के गेम (Sports) विकसित हुए हैं. समुद्री जीवों को देखने भी टूरिस्ट इन स्थानों पर जाते हैं.

4. **हवाई टूरिज्म :** इस प्रकार के पर्यटन में पर्यटक गुब्बारों की सहायता से आकाश की सैर का आनन्द लेते हैं. इनके अतिरिक्त ट्रेकिंग, स्कीइंग, स्कूबा डाइविंग, रॉक क्लाइबिंग, हैली स्कीइंग, जंगली सफारी व मोटर रैली जैसे अनेक विशिष्ट प्रभाग इन्हीं क्षेत्रों से सम्बन्धित हैं.

कैरियर : इस क्षेत्र में गाइड व टूरिस्ट एजेंसियों (जहाँ इनके लिए साधन व उपकरण उपलब्ध कराए जाते हैं) के क्षेत्र में प्रशिक्षित लोगों के लिए अनेक अवसर हैं.

प्रमुख प्रशिक्षण संस्थान

- *वेस्टर्न हिमालयन इंस्टीट्यूट ऑफ माउंटेनियरिंग एण्ड एलाइड स्पोर्ट्स*, मनाली (हिमाचल प्रदेश)

  पाठ्यक्रम : माउंटेनियरिंग, स्कीइंग.
- *नेहरू इंस्टीट्यूट ऑफ माउंटेनियरिंग*, उत्तरकाशी (उत्तरांचल)

  पाठ्यक्रम : माउंटेनियरिंग.
- *इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टूरिज्म एवं ट्रेवल मैनेजमेंट*, गोविन्दपुरी, ग्वालियर–474011 (मध्य प्रदेश)
- *नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वाटर स्पोर्ट्स*, ई-3, ड्रेमिला एपार्टमेंटस्, मंगौर हिल्स, वास्को डि गामा–403802

  पाठ्यक्रम : वाटर स्कीइंग, स्कूबा डाइविंग.
- *इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्कीइंग एण्ड माउंटेनियरिंग*, सी-1, डिपार्टमेंट ऑफ टूरिज्म हरमेंट्स, डलहौजी रोड, नई दिल्ली–110001

  पाठ्यक्रम : ट्रैकिंग, स्कीइंग, माउंटेनियरिंग और पैराग्लाइडिंग.

पर्यटन से सम्बन्धित अन्य संस्थान

- पर्यटन विभाग, *अवधेश प्रतापसिंह विश्वविद्यालय*, रीवा (म. प्र.)
- पर्यटन विभाग, *पांडिचेरी विश्वविद्यालय* (पांडिचेरी)
- *कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय*, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
- पर्यटन विभाग, *लखनऊ विश्वविद्यालय*, लखनऊ (उ. प्र.)
- पर्यटन विभाग, *हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय*, शिमला (हिमाचल प्रदेश)
- *जीवाजी विश्वविद्यालय*, ग्वालियर.
- डायरेक्टर, सी.बी.एस. तक्षशिला केम्पस, *देवी अहिल्या विश्वविद्यालय*, इंदौर (म. प्र.)
- *गुरु घासीदास विश्वविद्यालय*, बिलासपुर (छत्तीसगढ़).
- *आन्ध्रा वि. वि.*, वलटेयर, विशाखापत्तनम्–553003
- *रीजनल कॉलेज ऑफ मैनेजमेन्ट*, भुवनेश्वर– 751014
- डिपार्टमेन्ट ऑफ बी. ए. *अमरावती विश्वविद्यालय*, अमरावती–444604
- भूगोल विभाग, *शिवाजी विश्वविद्यालय*, विद्यानगर कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
- प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विभाग, *नागपुर विश्वविद्यालय*, नागपुर.
- डिपार्टमेन्ट ऑफ टूरिज्म एण्ड होटल मैनेजमेंट, *गढ़वाल विश्वविद्यालय*, गढ़वाल–246174
- पर्यटन विभाग, *कुमाऊँ विश्वविद्यालय*, नैनीताल.
- *मद्रास विश्वविद्यालय*, चेन्नई.
- टूरिज्म एण्ड ट्रेवल विभाग, *विक्रम विश्वविद्यालय*, उज्जैन.
- पर्यटन विभाग प्रमुख सी. बी. एस. *दिल्ली विश्वविद्यालय*, शेखसराय, नई दिल्ली.
- *गोआ इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट स्टडीज*, पणजी, गोआ.
- डिपार्टमेन्ट ऑफ टूरिज्म एण्ड होटल मैनेजमेन्ट, *बरकतउल्ला विश्वविद्यालय*, भोपाल.
- *इंस्टीट्यूट ऑफ मॉर्डन मैनेजमेन्ट*, 3 लाडडन रोड, कोलकाता–700017
- *इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रेवल एण्ड टूरिज्म मैनेजमेन्ट*, अरुणाचल बिल्डिंग, बारा रोड नई दिल्ली–11
- *केरल इंस्टीट्यूट ऑफ टूरिज्म एण्ड ट्रेवल स्टडीज*, पार्क व्यू त्रिवेन्द्रम (केरल)
- *इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टूरिज्म एंड ट्रेवल मैनेजमेन्ट*, न्यायमार्ग, चाणक्यपुरी नई दिल्ली.